हिंदी साहित्य में आधुनिक विमर्श की उपादेयता

डॉ. शेख़ बेनज़ीर

सहायक आचार्य,

हिंदी विभाग, एस.वी.सी.आर शासकीय महाविद्यालय, पलमनेर,

जिला – चित्तूर, आन्ध्रप्रदेश 517408

सामाजिक परिवेश की समीक्षा में हर बार यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक घटकों में स्थिरत्व नहीं होता । वे समय और स्थिति के अनुरूप बदलते रहते हैं । समाज में विद्यमान मूल प्रवृत्तियों में सांगोपांग परिवर्तन होते हैं । साहित्य सामाजिक संवेदनाओं का बिम्ब है । फलतः साहित्य भी सृजन से, पुनः सर्जन की ओर उन्मुख होता है । पूर्ववर्ती साहित्य कितना ही श्रेष्ठतर क्यों ना हो, उसे ऐसे दौर से गुजरना पडता है, जहाँ उसे बोझ एवं नीरस समझा जाता है । इसी प्रक्रिया से होकर हिंदी साहित्य अपने अधुनातन स्वरूप में प्रदीयमान है । हिंदी साहित्य में 19 वीं शती के आरंभ से ही प्राचीन परिपाटी के प्रति उदासीनता दिखाई देने लगी । परंपरागत छंदों, भक्ति, प्रेम, श्रृंगार और प्रशस्तियों के प्रति विद्रोह का स्वर तीव्रतर होने लगा । यह किसी एक विधा या विचारके प्रति विद्रोह ना था । यह तो समस्त साहित्य में नवीनता लाने के लिये चलने वाला आंदोलन था । नवीन विचारों की प्रेरणा से उत्पन्न वह भावधारा थी, जो आधुनिक साहित्य के नाम से अभिहित हुई । इसमें साहित्यकार आत्मनिष्ठता से समिष्टि, कल्पना से यथार्थ और अलौकिक से लौकिक भूमि की ओर अग्रसर होते गए । देश के सामाजिक–राजनीतिक आंदोलनों ने ना सिर्फ भारतीय समाज का प्रक्षालन किया, बल्कि वे साहित्य में छाई अराजकता को मिटाने में भी सफल हुए । जिसका परिणाम ही आधुनिक काल का आविर्भाव है । भारतेंदु, महावीर प्रसाद, रामचंद्र शुक्ल, प्रेमचंद, प्रसाद, पन्त, निराला, दिनकर जैसे साहित्यकारों की नैरंतर्य साहित्य सेवा से बीसवीं सदी से आधुनिक साहित्य का आविर्भाव हुआ ।

संसार में जो कुछ घटित होता है उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में होती है । साहित्यकार का हृदय समाज की संवेदनाओं से स्पंदित होता है । साहित्य हमेशा से समाज को दिशा देने एवं लोकमंगल की भावना को साकार करने के लिए कृत संकल्पित रहा है । साहित्य सर्जनशील प्रक्रिया है जो बेहतर समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है । वर्तमान समय में समाज के सभी वंचित, उपेक्षित, शोषित समूहों ने अपने अधिकारों, अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए निर्णायक लड़ाई छेड़ दी है । यह लड़ाई किसी के विरुद्ध नहीं अपितु मानवता के पक्ष में लड़ी जा रही हैं । इसी से 21 वीं सदी के साहित्य में अनेक विमर्शों की प्रतिष्ठा हुई है । विविध विमर्शों के माध्यम से पीड़ित, वंचित वर्ग की दबी आवाज को बल मिला, उन्हें हाशिए से मुख्य धारा में आने में मदद मिली, उनकी समस्याओं पर समाज की दृष्टि पड़ी और उस वर्ग के उत्थान को बल मिला ।

इस पृष्ठ भूमि को लेकर चलने वाले साहित्यकारों ने आधुनिकता के प्रति आस्था दिखाई । अब वे साहित्य अंधानुकरण नहीं करते । क्रांतिकारी होकर आधुनिकता के प्रति जागरूक होना साहित्यकार का सहज लक्षण होता है । इस कारण साहित्य में ऐसे विषय सामाविष्ट होते गए, जिसका विमर्श आवश्यक हो गया । समसामयिक मुद्दे अब साहित्य में समीक्षा और विचार विमर्श के लिए स्वीकृत हो गए । नारी चेतना, नारी –सशक्तिकरण, ग्राम चेतना, कृषक संघर्ष, आतंकवाद, बाल शोषण, दांपत्य जीवन, यौन विकृतियाँ, दलित चेतना, देश विभाजन की त्रासदी, मूल्य विघटन, शहरीकरण आदि पर विमर्श होने लगे । सामाजिक यथार्थ, लघुमानव, जीवन संघर्ष, दलित, प्रताडित, पीडित आदि साहित्य के आलोच्य विषय बन गए । फलतः आधुनिक विमर्श के नए–

नए आयाम उभरते गए । इन विमर्शों से साहित्य को बहुत कुछ मिला । आधुनिक साहित्य के विमर्शों से साहित्य का रूप कुछ इस प्रकार है ।

कोई भी साहित्यकार अपनी रचना में अपने वर्ण्य विषय को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करना मात्र अपना धर्म नहीं समझता । वह अपनी रचना में समाजिक जीवन की समीक्षा करता है । समाज के लिए आदर्शों , विकासशील प्रतिमानों, मूल्यों को निर्देशित करता है । जिसे सजग पाठक स्वीकार भी करता है । सहित्यकार पाठक को जीवन की कटु परिस्थितियों से अवगत कराता है ।" साहित्य में यथार्थ का ही नहीं – मानव आदर्शों, मानव विश्वासों और परंपरागत धारणाओं का निरूपण भी करता है ।"[1] आधुनिक विमर्शों में इन्हीं निरूपणों को महत्व मिलने लगा । साहित्यकारों ने बदले हुए समाज को नवीन जीवन दृष्टिप्रदान की । निराशा और कुंठाको दूर कर नवीन ऊर्जा का संचार करना इनका लक्ष्य था । साहित्यकार ने साहित्य को मात्र मनोरंजन का साधन मानने से इंकार कर दिया । वे साहित्य को विशिष्ट उद्देश्य का प्रतिपादक मानने लगे । अपने नायक एवं पात्रों को आदर्शों एवं मूल्यों का प्रतिनिधि मानने लगे । जिससे साहित्य समिष्टि की ओर अग्रसर होता गया । साहित्यकार जीवन की व्याख्या करने लगा । नए मानव को युगीन जीवन दृष्टिकोण प्रदान करना ज़रूरी समझा । साहित्यकार के पास वह शक्ति होती है जिससे वह मानव मन के गहन स्तरों को पहचान सकता है । इसे पहचानकर साहित्यकार पात्रों के माध्यम से जीवन दर्शन की व्याख्या करता है । आधुनिक विमर्शों में इन प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है ।

आधुनिक काल के आरंभ से ही भारतीय जनता जान चुकी थी वे अपनी संस्कृति और अस्तित्व को भुला रहे हैं । अब जरूरी था उसे बचाए रखना । कई दशकों से परतंत्रता की त्रासदी को झेल रहे थे । पर अब प्रश्न स्वदेश एवं स्व–अस्तित्व का था । साहित्यकारों ने भी इसकी जिम्मेदारी ली । साहित्यकारों ने भी अंधविश्वासों एवं कुविचारों को जड से मिटाने की गुहार लगाई । साहित्य के माध्यम से चलने वाले सांस्कृतिक चेतना के विस्तृत प्रभाव से भारतीयता की पुनः पहचान होने लगी । विदेशी संस्कृति के अंधे मोह की तीव्र भर्त्सना की जाने लगी । जो आधुनिक विमर्शों में दिखाई देने लगी ।" धार्मिक–सांस्कृतिक आंदोलन ने जिस प्रकार पुराने को नये से और नये को पुराने से सम्बद्ध किया, उसी प्रकार कला और साहित्य ने भी किया ।"[2] आधुनिक युग के साहित्य ने आधुनिक विचारों का समर्थन किया, परंतु परंपरगत स्वस्थ भारतीय मूल्यों एवं सद्विचारों का समर्थन किया । प्राचीन संस्कृति के उदात्त एवं विकासशील आदर्शों को नवीन रूप में प्रस्तुत किया । जिससे साहित्य के माध्यम से नवीन समन्वित संस्कृति की स्थापना हुई । साहित्यिक विधाओं में प्राचीन भारतीय संस्कृति को नए रूप में प्रस्तुत करने की प्रथा आरंभ हो गई । साहित्य को नया आयाम प्राप्त हुआ ।

आधुनिक विमर्शों की भरमार से साहित्य की परिधि में भी पर्याप्त विकास हुआ । अब साहित्यकार कल्पना से परे प्रत्यक्ष जन जीवन को ही साहित्य का मुख्य प्रतिपाद्य मानने लगे थे । प्रामाणिक अनुभूति के प्रति प्रतिबद्ध हो चुके थे । फलतः साहित्य के प्राचीन प्रतिमानों को सर्वथा निरर्थक साबित करने लगे । साहित्य में पंरपरागत प्रतीकों एवं उपमानों का परित्याग होने लगा । नवीन विचारों एवं जीवन सत्यों को उद्घाटित करने के लिए सरलतम शैलियों को अपनाने में ही साहित्यकार ने रुचि दिखाई । पद्य के क्षेत्र में मुक्त छंदों को प्रधानता मिलने लगी तो गद्य में बोलचाल की सरल एवं सपाट बयानी को । गद्य में अनेक नई विधाओं का समावेश हुआ जैसे डायरी, पत्रलेखन, कथा, नाट्य, निबंध, आलोचना, जैसे पूर्ववर्ती गद्य विधाओं के रूप गठन में परिवर्तन भी हुआ ।" अन्य विधाओं में भी कथ्य की विविधता और शैलीगत नूतन प्रयोगों की दिशा में इस युग के साहित्यकार में जो जागरूकता लक्षित होती है, वह पूर्ववर्ती लेखकों में नहीं मिलती ।"[3] यह आधुनिक विमर्शों की चेतना का परिणाम है ।

वैचारिक धरातल की दृष्टि से आधुनिक विमर्शों को पहचानने की कोशिश की जाए तो पता चलेगा कि विमर्शों के माध्यम से साहित्य में अधुनातन सिद्धांतों एवं दर्शनों का आगमन हुआ । साहित्यकारों ने विविध विषयों को रचना का प्रतिपाद्य चुना तो साहित्य

के मूल्य, सौंदर्य बोध, प्रवृत्तियाँ आदि नवीन रूप लेने लगे । साहित्य में रूढ़ हो चुकी धारणाएँ शिथिल होने लगी । कार्ल मार्क्स, फ्रायड के सिद्धांतों के प्रभाव से स्वतंत्रता पूर्व ही वैचारिक जड़ता को धक्का लगा था, जो कि स्वतंत्रता के बाद और अधिक हुआ । भारतीय समाज एवं राजनीति के लिए अभिशाप बन चुके घटकों को मिटाने की प्रक्रिया साहित्य में आरंभ हुई । यथार्थ, अति यथार्थ, बौद्धिकता, भौतिकता आदि विचारों के ढाँचे में पात्र ढलने लगे । ज्ञान–विज्ञान के विकास के फलस्वरूप साहित्यकारों की दृष्टि में भी युगांतरकारी परिवर्तन हुआ । "विज्ञान के द्वारा आध्यात्म और आध्यात्मिकता जैसी चीजों का पूरी तरह निषेध किया गया, क्योंकि उसके पीछे किसी तरह की इंद्रिय गम्य – स्थूल कारण कार्य की श्रृंखला उसे नहीं मिली परिणाम यह हुआ कि वैज्ञानिक उन्नति के अनुपात में ही दिनोंदिन मानव के प्रति ही संपूर्ण निष्ठा केंद्रित होती गई । मानवेतर जो भी था, मूल्यहीन होता चला गय ।"[4] नए विमर्शों ने साहित्य जगत में विचारों का सैलाब ला दिया । जिससे मानव समाज के जीवन में बदलते परिवेश के अनुसार आते उनके मानसिक विकास का परिचय भी मिलने लगा ।

अपनी उपादेयता के बल पर आधुनिक विमर्श अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए सक्रिय है । नवोन्मेषी विचारों से प्रभावित होकर साहित्य ने जो रूप लिया, वह निस्संदेह अनिवार्य था । आधुनिक विचार यों ही नहीं पैदा होते । वे समय और परिवेश के गर्भ में वर्षों की प्रतीक्षा का फल होते हैं । जब भी समाज और साहित्य वैचारिक कुंठा से ग्रस्त होते हैं, आधुनिक विचारों की आवश्यक होती है । सजग साहित्यकार एवं नागरिकों की पहल से आधुनिक विचार अवश्य ही प्रस्फुटित हो जाते हैं । आधुनिक युग अपने पूर्ववर्ती युगों से नितांत भिन्न है । नए विमर्शों से इस युग में भौतिकता एवं बौद्धिकता का सामावेश हुआ । यथार्थ और उपियोगिता का प्रबल समर्थन हुआ । आधुनिकता का एक अर्थ ही व्यक्ति एवं समाज को विकासशील दर्शन प्रदान करना है । इस दृष्टि से हिंदी साहित्य का आधुनिक विमर्श सफल है । आधुनिक विमर्श की उपादेयता यथोचित है, जिसने साहित्य का नवीनीकरण कर समाज में नवजीवन का अंकुर प्रस्फुटित किया ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ. नगेंद्र– साहित्य का समाजशास्त्र – पृ.सं.37
2) डॉ. बच्चन सिंह – हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – पृ. सं. 302
3) सं. डॉ. नगेंद्र– हिंदी साहित्य का इतिहास – पृ. सं. 711
4) त्रिभुवन सिंह– आधुनिक साहित्यिक निबंध – पृ.सं. 25